उपसंहार

हिन्दी आधुनिक साहित्य में कहानी विधा का उद्‌भव अपने आपमें एक महत्वपूर्ण घटना है। १९वीं शती के उत्तरार्ध से प्रारंभ होनेवाली कहानी विधा अपने उत्तरोतर काल में अनेक आंदोलनों जिनमें प्रेमचंदपूर्व युग, प्रेमचंद युग और प्रेमचंदोत्तर युग में नई कहानी, अ-कहानी, समांतर कहानी, सक्रिय कहानी, सहज कहानी, जनवादी कहानी, आंचलिक कहानी और अंत में सचेतन कहानी आंदोलन से गुज़रती हुई आज अपने सुवर्णयुग में बिलख रही हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी कहानी में एक नया मोड आया, जिसे 'नयी कहानी' के नाम से पहचाना गया। तत्कालीन कहानियों में देश-विभाजन की करूण आख्यायिका की मार्मिक अभिव्यक्ति की गई। इसमें अज्ञेय, मोहन राकेश, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, चतुरसेन शास्त्री, उग्र एवम् अमृतलाल नागर आदि प्रमुख हस्ताक्षर रहे। जिन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा विभाजन की विभिषिका को व्यक्त करते हुएँ बिनसाम्प्रदायिकता का परिचय भी करवाया। ये कहानियाँ विभाजन की राजनैतिक त्रासदी का मानवीय और मनोवैज्ञानिक दस्तावेज है। इन कहानियों में उस ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विस्फोट के विभिन्न पहलुओं की, उससे उत्पन्न होने वाली आंतरिक तथा बाह्य समस्याओं की ओर इन सबमें अन्तर्निहित मानवीय करूणा की बहुरंगी अभिव्यक्ति हुई है।

भारत-पाकिस्तान विभाजन की सबसे बडी दुर्घटना साम्प्रदायिक दंगों के रूप में सामने आई। मुसलमान पाकिस्तान जाने लगे और हिन्दुओं को पाकिस्तान से भारत को लौटना पडा। यह कार्य शान्तिपूर्ण ढ़ंग से भी हो सकता था लेकिन विभाजन की विचारधारा ने साम्प्रदायिकता की दरार को ओर अधिक बढ़ा दिया फलस्वरूप हिन्दू-मुस्लिम सम्प्रदायों में एक दूसरे के प्रति विद्वेष, इर्ष्या और आक्रोश उत्पन्न हो गएँ। यहीं नहीं ये आपस में एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन गये। एक-दूसरे के घर जला दिये गएँ, कत्ले आम हुआ, लूट-पाट की घटनाएँ हुई, एक बिभत्स दृश्य उत्पन्न हो गया। लोग घर से बेघर हो गएँ। साम्प्रदायिक दंगों के साथ-साथ शरणार्थी समस्या भी उत्पन्न हो गई। जिनमें अज्ञेय की कहानी 'शरणदाता' में बाहरी परिस्थितियों के दबाव में संबंधों और मूल्यों को विघटित होने की प्रक्रिया के बीच

मानवीय करुणा की शाश्वतता के प्रति आस्था के स्वर की गूँज है। विषाक्त वातावरण, द्वेष, घृणा के चाबुक से तडफडाते हुए हिंसा के फोडे विष फैलाने के लिए सम्प्रदायों के अपने संगठन और उसे भडकाने को पुलिस और नौकरशाही से संबंधित विवरण वातावरण की उस बीभत्सता की ओर संकेत करते है जिससे व्यक्ति का आत्मविश्वास और आत्मबल डोलने लगता है। विष्णु प्रभाकर की कहानी 'मेरा वतन' में अपनी धरती से, अपनी क्षेत्रीय सभ्यता-संस्कृति और समाज से उखडे-टूटे हुएँ उन व्यक्तियों की यातना-यात्रा हैं जो विभाजन के हादसे के यथार्थ को सह नहीं पा रहे है और उनकी विक्षिप्तता उन्हें आगे नहीं पीछे की ओर खींचती है। बदली हुई परिस्थिति में अपने वतन में व्यक्ति इतना बेगाना, इतना अजनबी हो गया है कि उसे भारत में पाकिस्तान का जासूस समझकर गोली मार दी जाती है और भारत में पाकिस्तान का नागरिक समझकर जेल में डाल दिया जाता है। व्यक्ति हिन्दू या मुसलमान भी अब नहीं रह गया है। वह हिन्दुस्तानी या पाकिस्तानी हो गया है। विभाजन से त्रस्त व्यक्ति न अतीत से टूट पा रहा है और न वर्तमान से जुड़ पा रहा है। इस गहरी खींचतान ने उसे विक्षिप्त या पूरा पागल बना दिया है। उसी प्रकार उनकी अगम अथाह है, अधुरी कहानी, तांगेवाला, सफर का साथी, वह रास्ता, पड़ोशी, आजादी, हिन्दू, मैं जिंदा रहूंगा, शमशू मिस्त्री (मेरा वतन), अज्ञेय कृत- लेटरबक्स, बदला, रमन्ते तत्र देवता, मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई, नारंगियाँ (अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ), भीष्म साहनी कृत- अमृतसर आ गया है, निमित्त (सिक्का बदल गया), उपेन्द्रनाथ अश्क कृत- चारा काटने की मशीन (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ) ज्ञानी, टेबूल लैण्ड (सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ), मोहन राकेश कृत- मल्बे का मालिक (सिक्का बदल गया), परमात्मा का कुत्ता, कम्बल (वारिस), क्लेम (क्वार्टर), चन्द्रगुप्त विद्यालंकार कृत- मास्टर साहब, पतझड (मेरी प्रिय कहानियाँ), पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत- चौडा छुरा (पोली इमारत), दो जख आग (मुक्ता), मलंग (यह कंचन सी काया), खुदा के सामने, दोजखःनरक, शाप (ऐसी होली खेलो लाल), चतुरसेन शास्त्री कृत- रजील, लम्बग्रीव (मेरी प्रिय कहानियाँ), कमलेश्वर कृत- जिन्दा मुर्दे (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ), कितने पाकिस्तान, धूल उड जाती है, भटके हुए लोग (राजा निरबंसियाँ), कृष्णा सोबती कृत- सिक्का बदल गया : (सिक्का बदल गया), मेरी माँ कहाँ (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ),

अमृतलाल नागर कृत- आदमी : जाना-अनजाना (मेरी प्रिय कहानियाँ), आदमी नहीं ! नहीं !! (एटम बम) इन सारे स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानीकारों की विभाजन पर लिखी गई कहानियों ने अपनी श्रेष्ठ संरचना में हिन्दू-मुसलमान और भारत पाकिस्तान के बीच अविभाज्य मानवीय श्रेष्ठता और दो राष्ट्रों की ऐतिहासिक भौगोलिक सांझ का संचय कर रखा है।

विभाजन का हादसा भारतीय समाज को अनेक वर्षो तक प्रभावित करता रहा हैं। अतः समकालीन कहानी के कथा साहित्य के रचनात्मक उन्मेष में इस हादसे की अलग पहचान है। उसमें भारतीय उपमहाद्वीप की अविभाज्य संस्कृति का सांझा संस्कार संचित है, भाव-संसार आबाद है, जिसकी प्रासंगिकता आज ३० वर्षो के बाद भी दिखाई देती है। भारत विभाजन के तथ्यों को इतिहासकारों ने या तो मूल प्रलेखों से पूर्ण रूप से पृथक रखकर प्रस्तुत किया हैं अथवा अपनी भावनाओं के आधार पर पेश किया है। इन सबका आशय यह रहा है कि वे अधिक से अधिक यह प्रदर्शित करने का प्रयत्न करते रहे है कि भारतवासियों में विभिन्नता के होते हुए भी राष्ट्रीय एकता रही है, जो एक कल्पना मात्र है। हिन्दू धर्म और इसकी सभ्यता सनातन है। न इसका कोई प्रवर्तक था और न ही इसका कोई केनद्रीय सत्ता है। हिन्दू समाज का विभाजित स्वरूप इस बात का प्रमाण है कि हिन्दू में साम्प्रदायिकता नहीं हैं। इसका सबसे बडा प्रमाण यह है कि भारत में राजनीतिक क्षेत्र में कभी किसी हिन्दू साम्प्रदायिक राजनीतिक दल को हिन्दुओं में स्वीकार नहीं किया है। हिन्दू महासभा कांग्रेस की तुलना में एक प्रभावहीन व कमजोर दल रहा। उन्होंने राष्ट्रीय भावना को बल इसीलिए दिया कि वे साम्प्रदायिक नही है। हिन्दू 'सर्व धर्म पंथ संभव' के सिद्धांत में विश्वास करता है। इसका धर्म निर्पेक्षता में विश्वास है। धर्म राज्य का विरोधी है। हिन्दुत्व का जन्म और संगठन मनुष्यों में शान्ति, आंतरिक शान्ति व सद्भावना के लिए हुआ। इसका संगठन बाह्य शत्रुओं के विरोध के लिएँ नहीं हुआ, इसलिए चाहे कोई व्यक्ति नास्तिक हो अथवा अन्य धर्मावलम्बी इसमें सबके लिएँ सहयोग की भावना है। इस धर्म का एक नाम भी नहीं है। ईसाई पादरियों ने अपने लिएँ ऐसा देश अधिक अच्छा और उपयुक्त समझा जहाँ मुसलामन और यहूदी नहीं थे जिससे वे अपने धर्म का प्रचार कर सके।

हिन्दू समाज एक ऐसा समाज है जहाँ 'स्व' की चेतना ही नहीं है। साम्प्रदायिकता ऐसे समाज व धर्म का गुण है जहाँ लगातार अधिक स्व-चेतना रहती है। इसी असाम्प्रदायिकता की भावना के कारण यह भिन्नता में एकता की खोज में लगा रहा है। हिन्दू समाज में विभिन्न लोग विभिन्न रीति-रिवाजों का अनुसरण करते हैं। उनके कुछ प्रमुख विचार और मूल्य है परंतु उनको किसी बलकृत अनुरूपता का पालन नहीं करना पडता। इसलिए हिन्दू समाज में कभी भी विभिन्न सम्प्रदायों या विभिन्न रिवाजों की समस्या नहीं रहीं, बल्कि उसके सामने मुख्य समस्या असमान तत्वों की रही हैं। इस्लाम एक ऐसा तत्व है। जितने सेमेटिक धर्म है सभी असहनशील है। इसी असहनशीलता के कारण बहावी आन्दोलन का जन्म हुआ जिसके धर्मोपदेशकों ने बंगाल में यह उपदेश दिया कि भारत काफिरों का देश हैं इसलिए उनके विरुद्ध जिहाद अनिवार्य है।

पाकिस्तान इतिहासकार स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि "जिस समय तक मुस्लिम लीग का जिन्ना द्वारा पुनः संगठन किया गया उससे पूर्व ही भारत-विभाजन की भावना, मुस्लिम राजनीतिज्ञों, लेखकों और विशेष रूप से मुस्लिम बुद्धिजीवियों में घर कर गयी थीं।"[1] पुरानी बातों को मुस्लिम लीग के विभिन्न अधिवेशनों में दोहराया गया और मुसलमानों को यह बात स्पष्ट रूप से समझा दी गयी कि यदि उनका पृथक देश नहीं बना तो हिन्दू लोग अपने बहुत्तम वाले प्रांतों में मुसलमानों के साथ वहीं व्यवहार करेंगे जैसे हिटलर ने सूडेटन लैन्ड के निवासियों के साथ किया था। इतिहासकार भारत-विभाजन का कारण आर्थिक आधार पर ढूंढते है। समाजवादी कांग्रेसियों में यह अवधारणा रही हैं कि "आर्थिक समानता के कारण मुसलमानों में पृथकतावाद की भावना उत्पन्न हुई और उसे आर्थिक समानता प्रदान करके समाप्त किया जा सकता था। परंतु यह धारणा बिलकुल भ्रांतिपूर्ण है क्योंकि मुस्लिम लीग के पास कोई आर्थिक प्रोग्राम मुसलमानों की दशा सुधारनेका नहीं था जबकि कांग्रेस का अधिकार कार्यक्रम आर्थिक दशा सुधारने के विषय में था। यू. पी. का मुसलमान हिन्दुओं से आर्थिक दृष्टि से उस समय बहुत सम्पन्न था, परंतु उनका समर्थन भी पाकिस्तान बनाने के लिएँ था।"[2]

भारत में साम्प्रदायिकता और पृथकतावाद उन अल्पसंख्यकों की समस्याएँ है जो अपने को धर्म, संस्कृति, सभ्यता, लिपि, भाषा, इतिहास, वेशभूषा, जाति, रीति, रिवाज और

परम्पराओं से बिलकुल पृथक मानते है। धर्म परिवर्तन के साथ उनका पूरे का पूरा सोच ही बिलकुल भिन्न हो जाता है। इसलिए वे कभी भी भारतीय राष्ट्रीय मुख्य धारा के साथ जुड़ने को तैयार नहीं हुएँ और बहुसंख्यकों को सदैव शक की दृष्टि से देखते रहें। ऐसे भिन्न सोच के साथ उन्हें एक राष्ट्रवाद में बाँधने को कुछ भी तो नहीं था।

इस प्रकार विभाजन की संवेदना का एक अलग अपना कथा संचार है। विभाजन भारतीय संदर्भ में एक ऐसी घटना रहा जिसने व्यक्ति को हर स्तर पर प्रभावित किया और न चाहते हुए भी व्यक्ति को यह पीड़ा झेलनी पड़ी। विभाजनगत विविध संवेदनाओं को हिन्दी कहानीकारों के साथ-साथ उर्दू, पंजाबी, गुजराती, मराठी और बंगला कहानीकारों ने भी अभिव्यक्ति प्रदान की है, किंतु हिन्दी कहानी का संसार सबसे अधिक विस्तृत रहा। विभाजन के कई सन्दर्भो को कहानियों का आधार बनाया गया। इन कहानियों में एक बात मोटे तौर पर दिखाई देती है, वह है- परिस्थितियों से पीडित व्यक्ति के प्रति करुणा, सहानुभूति आदि भावों का जागृत करना। यह कहानियाँ यथार्थ की भावभूमि पर टिकी हुई है इसलिए पाठक के मानसिक धरातल का गहराई से छूती है, वह अपने को इस संवेदना से जुडा हुआ पाता है। करुणाभाव इन कहानियों के केन्द्र में रहा है और इसी कारण ये कहानियाँ अधिक सशक्त और मार्मिक बन पडी है।

समग्रतः स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने अपनी कहानियों के द्वारा सत्य को कल्पना से रंगकर उसी जन समुदाय को सोपा हैं जो सदा झुठ से ठगा जाकर भी सच के लिएँ अपनी निष्ठा और उसकी ओर बढ़ने का साहस नहीं छोडता।

संदर्भ सूची

(१) फाऊँन्डेशन ऑफ पाकिस्तान भाग-२ सैयद शरीफुद्दीन पीरजादा पृष्ठ- १८

(२) वही, पृष्ठ- ५१

ग्रंथ सूची

१. आधार ग्रंथ

(१) अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ-२	अज्ञेय	-राजपाल एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९७५
(२) सिक्का बदल गया	डा. नरेन्द्र मोहन	-सीमान्त पब्लिकेश दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९७५
(३) मेरा वतन	विष्णु प्रभाकर	-निधि प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९८०
(४) भा. वि. : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानिया	डा. नरेन्द्र मोहन	-निधि प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९८०
(५) सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ	उपेन्द्रनाथ अश्क	-निलाभ प्रकाशन, प्रथम संस्करण- १९७३
(६) वारिस	मोहन राकेश	-राजपाल एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९७२
(७) क्वार्टर	मोहन राकेश	-राजपाल एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९७२
(८) मेरी प्रिय कहानियाँ	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	-राजपाल एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९७६
(९) पोली इमारत	पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	-आत्माराम एन्ड सन्स, प्रथमसंस्करण- १९६४
(१०) मुक्ता	पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	-आत्माराम एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९६४

(११) यह कंचन सी काया — पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'-आत्माराम एन्ड सन्स प्रथम संस्करण- १९६४

(१२) ऐसी होली खेलो लाल — पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' -आत्माराम एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९६४

(१३) मेरी प्रिय कहानियाँ — आचार्य चतुरसेन शास्त्री-राजपाल एन्ड सन्स, तीसरा संस्करण- १९७६

(१४) राजा निरबंसियाँ — कमलेश्वर -भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, द्वितीय संस्करण- १९६६

(१५) मेरी प्रिय कहानियाँ — अमृतलाल नागर -राजपाल एन्ड सन्स, पाँचवाँ संस्करण- १९८१

(१६) एटम बम — अमृतलाल नागर -तक्षशिला प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९७२

२. संदर्भ ग्रंथ

(१) हिन्दी साहित्य का इतहास — आचार्य रामचंद्र शुक्ल -नागरी प्रचारणी सभा- काशी, तेरहवा संस्करण संवत- २०१९

(२) कहानी : नई कहानी — डा. नामवरसिंह -लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- १९९४

(३) हिन्दी कहानी-पहचान और परख डॉ. इन्द्रनाथ मदान -लिपि प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण- १९९२

(४) हिन्दी कहानी का इतिहास डॉ. लालचंन्द्र गुप्त-'मदान' -संजीव प्रकाशन हरियाणा, प्रथम संस्करण- १९८८

(५) हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ -गिरनार प्रकाशन इलालीगंज, महेसाणा, प्रथम संस्करण- १९८१

(६) हिन्दी कहानी-बदलते प्रतिमान डॉ. रघुवर दयाल वाष्णेय -नेशनल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९८६

(७) सक्रिय कहानी की भूमिका राकेश वत्स -चित्रलेखा प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- १९७७

(८) हिन्दी कहानी के आंदोलन-उपलब्धियाँ और सीमाएँ रजनीश कुमार -नेशनल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९८६

(९) रचनावली खण्ड-५ मुक्तिबोध -नेशनल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९८६

(१०) आंचलिक हिन्दी कहानी चंद्रधर कणी -चित्रलेखा प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- १९७७

(११) तमस भीष्म साहनी -राजकमल प्रकाशन, १-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ प्रथम संस्करण- १९८४

(१२) स्वातंत्र्यत्तर हिन्दी कहानी कथ्य और शिल्प डा. शिवशंकर पाण्डेय -नेशनल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९८६

(१३) सचेतन कहानी : रचना और विचार डा. महीपसिंह -नेशनल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९८६

(१४) नयी कहानी : उपलब्धियाँ और सीमाएँ डा. गौरधनसिंह शेखावत -रामा पब्लिशिंग जयपुर, प्रथम संस्करण-१९७८

(१५) समकालीन कहानी की पहचान डा. नरेन्द्र मोहन -प्रवीण प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९७८

(१६) हिन्दी साहित्य का इतिहास डा. नगेन्द -लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण- १९९४

(१७) राजीवगांधी के प्रधानमन्त्रित्व-काल में भारत-पाक सम्बन्ध संजय कुमार सिंह -विश्वभारत पब्लिकेशन्स अन्सारी रोड, दरिया गंज नई दिल्ली- ११०००२ प्रथम संस्करण- २००५

(१८) स्ट्रगल फोर फ्रीडम आर. सी. मजूमदार -कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयोर्क ओफ लन्दन- १९६७ भाग- ११

(१९) साम्प्रदायिक राजनीति व भारत का विभाजन तेज वीर सिंह -विश्वभारती पब्लिकेशन्स अन्सारी रोड, दरिया गंज नई दिल्ली- ११०००२ प्रथम संस्करण- २००५

(२०) फाउन्डेशन्स ओफ पाकिस्तान सैयद शरीफुद्दीन पीरजादा -कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयोर्क ओफ लन्दन- १९६७ भाग-२

(२१) दि इमरजैन्स ओफ पाकिस्तान चौधरी मौहम्मद अली -कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयोर्क ओफ लन्दन- १९६७

(२२) महात्मा गांधी धनन्जयकीर -पोप्युलर प्रकाशन, बम्बई- १९७३

(२३) महात्मा गांधी एन्ड हिज ऐपोसिल्स वेद मेहता -एन्डीइस लिमिटेड, लन्दन-१९७७

(२४) सिक्का बदल गया — डॉ. नरेन्द्र मोहन — -सीमान्त पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९७५

(२५) आज़ादी की कहानी — मौलाना अबुल कलाम आजाद — -ओरियंट लांग्मैन लिमिटेड आसफ अली रोड, नई दिल्ली- ०२ प्रथम संस्करण- १९६५

(२६) समकालीन हिन्दी कहानी : विविध संदर्भ — डॉ. कीर्ति केसर — -नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण- १९६६

(२७) ये तेरे प्रतिरूप — अज्ञेय — -राजपाल एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९७५

(२८) आज की हिन्दी कहानियाँ — डॉ. भैरूलाल गर्ग — -चित्रलेखा प्रकाशन, १४७ -सोहबतिया बाग, इलाहाबाद- ६ प्रथम संस्करण- १९६६

(२९) अनित्य — बदी उज्जमा — -निधि प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९८०

(३०) परदेशी — बदी उज्जमा — -सीमान्त पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९७५

(३१) मलबे का मालिक — मोहन राकेश — -सीमान्त पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९७५

(३२) लम्बग्रीव — आचार्य चतुरसेन शास्त्री — -राजपाल एन्ड सन्स, तीसरा संस्करण- १९७६

(३३) मीनिंग ऑफ पाकिस्तान — एक. के. खाँ दुरानी — -चित्र लेखा प्रकाशन, १४७ -सोहबतिया बाग, इलाहाबाद- ६ प्रथम संस्करण- १९६६

(३४) खण्डित भारत — डॉ. राजेन्द्र प्रसाद — -प्रभात प्रकाशन, ४/११ आसफ अली रोड, नई दिल्ली- ११०००२ प्रथम संस्करण- २००९

(३५) ए शोर्ट हिस्टरी ऑफ मुसलिम रूल इन इण्डिया — ईश्वरी प्रसाद — -राजपाल एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९७२

(३६) इन्फ्लुएंस ऑफ इसलाम, ऑन इंण्डियन कल्चर — ताराचंद — -राजपाल एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९७२

(३७) कल्चर आस्पेक्ट ऑफ मस्लिम रूल इन इण्डिया — एस. एम. जाफर — -राजपाल एन्ड सन्स, प्रथम संस्करण- १९७२

(३८) तेईस हिन्दी कहानियाँ-एक अध्ययन डॉ. कमलनारायण टंडन -हिन्दी साहित्य भंडार
५५, चौपटियाँ रोड,
सराय मालीखाँ, लखनऊ-३
प्रथम संस्करण- १९६५

(३९) जेनिसिस ओफ पाकिस्तान वी. वी. नागरकर -एलाइड पब्लिकेशन्स,
बम्बई- १९७५

(४०) प्रतिनिधि कथामाला श्री मार्कण्डेय -लोक भारती प्रकाशन,
दरबारा बिल्डिंग, एम.जी.
रोड, इलाहाबाद-१
तृतीय संस्करण- २००७

(४१) कथाश्री डॉ. विजयपाल सिंह -जयभारत प्रकाशन,
लालजी मार्केट, माया
प्रेस रोड, इलाहाबाद-३
प्रथम संस्करण- १९६४

(४२) कहानी कुंज डॉ. उमाकांत शास्त्री -जयभारत प्रकाशन,
लालजी मार्केट, माया
प्रेस रोड, इलाहाबाद-३
प्रथम संस्करण- २००४

(४३) मेरी प्रिय कहानिया मोहन राकेश -राजपाल एण्ड सन्स,
मदरसा रोड,
दिल्ली- ११०००६
प्रथम संस्करण- २००४

(४४) मानक कहानियाँ मार्कण्डेय -लोकभारती प्रकाशन,
महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद- १

संस्करण- १९९७

(४५) तेईस हिन्दी कहानियाँ : एक अध्ययन कमलनारायण टंडन -हिन्दी साहित्य भण्डार, ५५ चौपटियाँ रोड, लखनऊ- ३ संस्करण- १९६७

३. पत्र पत्रिकाएँ

(१) धर्मयुग	गंगा प्रसाद विमल	२८ मई- १९६७
(२) सारिका	कमलेश्वर	अक्तूबर- १९७४
(३) सारिका	कमलेश्वर	अगस्त प्रथम- १९७६
(४) सारिका	कमलेश्वर	जून- १९७५
(५) मंच	राकेश वत्स	वार्षिक अंक- १९७३
(६) नई कहानियाँ	अमृतराय	मार्च- १९६८
(७) जनवादी साहित्य के मानदंड	शिवराम	नवम्बर- १९६१
(८) आधार	महीपसिंह	नवम्बर- १९६४
(९) कल्पना	हेतुभाद्वाज	अगस्त- १९७५

४. कोश

(१) हिन्दी भाषा एवम् साहित्य विश्व कोश (भाग-१,२) गणपतिचंद्र गुप्त -एटलान्टिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीबयुटर्स, दिल्ली, संस्करण- १९९५

(२) संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल -नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, वि. सं. २०१८

(३) हिन्दी साहित्य कोश (भाग- १, २) धीरेन्द्र वर्मा -वाराणसी, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, द्वितीय संस्करण- वि. सं. २०२०

(४) राष्ट्रीय भाषा कोश महापण्डित राहुल सांकृत्यायन -वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- १९५३

(५) हिन्दी शब्द कोश डॉ हरदेव बाहरी -राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण- २००६

(६) बडा कोश प्रो. रतिलाल नायक -अक्षरा प्रकाशन, अहमदाबाद, द्वितीय आवृति- २००३

(७) गुजराती हिन्दी कोश विनोद रेवाशंकर त्रिपाठी -गुजरात विद्यापीठ मण्डल गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, संस्करण- १९९२